उदभावना

जन भावनाओं का साझा मंच

अंक : 155-156

मूल्य : 50 रुपये

जो हिंदुस्तान हम बना रहे हैं

मंगलेश डबराल विशेषांक

उद्भावना का आगामी अंक सुप्रसिद्ध कवि और विचारक मंगलेश डबराल पर केंद्रित होगा। निम्न कवियों, लेखकों व बुद्धिजीवियों से इस अंक में लिखने का आग्रह किया जा रहा है। इन सबके अतिरिक्त भी लेख व संबंधित सामग्री सविनय आमंत्रित है।

ज्ञानरंजन	सुंदरचंद ठाकुर	राकेशरेणु
असद जैदी	सविता सिंह	रवि भूषण
अशोक वाजपेयी	ओम थानवी	रंजीत वर्मा
सच्चिदानंद	मदन कश्यप	प्रफुल्ल शिलेदार
अरुंधतिराय	आनन्द स्वरूप वर्मा	गणेश विस्पुते
प्रियदर्शन	इब्बार रब्बी	संजय कुंदन
योगेन्द्र आहुजा	विष्णुनागर	संजय जोशी
अरविन्द मोहन	अजय सिंह	भाषा सिंह
नरेश सक्सेना	जानकीप्रसाद शर्मा	फरीद खान
चन्द्रभूषण	रविन्द्र त्रिपाठी	मृत्युंजय
लीलाधर मंडलोई	इरशाद कामिल	अपूर्वानंद
पंकज चतुर्वेदी	आशुतोष	हेमंत कुकरेती
कुमार अंबुज	मनोहर नायक	हरिमृदुल
विजय कुमार	अनीता वर्मा	गगन गिल
राजेश जोशी	विमल कुमार	अल्मा डबराल व अन्य।

उद्भावना

वर्ष : 38 अंक : 155-156

अगस्त 2024 में प्रकाशित

सलाहकार मंडल

डॉ. राजकुमार शर्मा,

राजेश जोशी, रामप्रकाश त्रिपाठी

संपादक मंडल

अजेय कुमार (संपादक)

प्रियदर्शन

मुशर्रफ अली

विनीत तिवारी

सहयोग

रामपाल कटवालया

चित्र

पंकज कुमार, राजीव गांधी फाउंडेशन न.दि.

संपादकीय पता

एच-55, सेक्टर 23, राजनगर, गाजियाबाद

पत्राचार का पता

ए-21, झिलमिल इंडस्ट्रिअल एरिया,

जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

मो. 9811582902

E-mail : pd.press@gmail.com

आवरण : राजकुमार

सहयोग राशि

यह अंक	:	50 रु.
वार्षिक	:	300 रु.
संस्थानों से वार्षिक	:	500 रु.
आजीवन (व्यक्ति)	:	3000 रु.
आजीवन (संस्थानों के लिए)	:	5000 रु.

सभी मनीआर्डर/चैक/ड्राफ्ट **'उद्भावना'** के नाम से पत्राचार के पते पर ही भेजें. जो पाठक हमारे अकाउंट में सीधे जमा करना चाहते हैं, वे कृपया निम्न सूचना देखें

अकाउंट : UDBHAVANA

अकाउंट न. : 90261010002100

बैंक : Canara Bank

ब्रांच : राजेंद्र नगर, नई दिल्ली-110060

IFSC : CNRB0019026

आजीवन सदस्यों को अब तक छपे सभी उपलब्ध महत्त्वपूर्ण विशेषांक भेंट स्वरूप दिए जाएंगे

पत्रिका में छपे विचार लेखकों/लेखिकाओं के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं है।

आलेख

विदूषकों का राक्षसी आनंद	**मृणाल पांडे**	12
अयोध्या को मर्यादाहीनता बर्दाश्त नहीं	**कृष्ण प्रताप सिंह**	14
कानून मानवीय है, दैवीय नहीं	**फैज़ान मुस्तफा**	18
साध्य-साधन की शुचिता और संघ का बेमेल दर्शन	**अनिल चौधरी**	20
मतदाताओं ने संस्थाओं को राहत की सांस दिलाई	**सुश्री रेखा शर्मा**	21
राष्ट्र-राज्य की रपटीली राहें	**विभूति नारायण राय**	22
सैनिक स्कूल या हिंदुत्व की पाठशाला	**सुभाष गाताडे**	31
जूलियन असांज होने का महत्व	**बप्पा सिन्हा**	39
धुर-दक्षिणपंथ से त्रस्त दुनिया को फ्रांस ने दिया फॉर्मूला	**सत्येंद्र रंजन**	55

कहानियाँ

टोपी काल	**नवीन जोशी**	5
पट्टी	**शेखर मल्लिक**	42
यह प्यार नहीं	**अर्चना सिन्हा**	74

बहस

भारतीय वामपंथ पर एक घुमन्तू आख्यान	**उर्मिलेश**	61

कविताएँ

अदनान कफ़ील दरवेश-11, संजय कुंदन-28, रंजीत वर्मा-29, प्रफुल्ल शिलेदार-70

श्रद्धांजलि

साहित्य का ध्रुव तारा : सुरजीत पात्तर-**गुरबख्श सिंह मोंगा**-82, सदी का बेजोड़ कवि : सुरजीत पातर-**मनोज शर्मा**-83, 'यार कांति'-राजेंद्र शर्मा-84

फिल्म समीक्षा

''लापता लेडीज़''	**मनजीत राठी**	86
''ढाई आखर''	**उमेश जोशी**	89

खेल

दूसरा विराट मिलना मुश्किल पर यंग ब्रिगेड है दमदार	**मनोज चतुर्वेदी**	91

पुस्तक समीक्षा

समय शिला पर	**सूरज पालीवाल**	93
'आगे और लड़ाई है'-आपातकाल से वर्तमान तक	**फरीद खाँ**	95
'यशपाल : क्रान्ति से कलम तक'	**महेश दर्पण**	98
नदी का मर्सिया तो पानी ही गाएगा	**मयंक खरे**	101
जो हिंदुस्तान हम बना रहे हैं	**शंभूनाथ शुक्ल**	103

साहित्यिक समाचार

अरुण अर्णव खरे को कमलेश्वर सम्मान-97 / साहित्यकारों को जरूरत है जनता की आवाज बनने की-**मुनेश त्यागी**-104

अपनी बात-2

अपनी बात

जो हिंदुस्तान हम बना रहे हैं

पिछले कुछ वर्षों में अपना देश अजीब ढंग से बदला है। शोर बढ़ता गया है और संवाद का पर्यावरण नष्ट होता गया है। राजनीतिक–सामाजिक दुराग्रह बड़े होते गए हैं और संस्कृति और सौमनस्य का परिसर घटता चला गया है। इस परिघटना के पीछे कम से कम तीन प्रक्रियाएं काम कर रही हैं।

पहली प्रक्रिया राजनीति के उस घनघोर सांप्रदायिकीकरण के रूप में सामने आई है जिसने देशभक्ति और राष्ट्रवाद को अपना मुखौटा बना रखा है। यह राजनीति राष्ट्र की बात करती है लेकिन राष्ट्र के तंतुओं को बदलना चाहती है। उसे विभाजन का दंश याद है, लेकिन उसके पहले चला वह स्वतंत्रता संघर्ष नहीं जिसने भारत की राष्ट्रीयता को अपनी तरह से परिभाषित किया था। इस राष्ट्रीयता में सभी धर्मों और भाषाओं की स्वाभाविक जगह थी और उनके प्रति परस्पर सम्मान का भाव था। यह महज किसी आदर्श से प्रेरित–पोषित विचार नहीं था, बल्कि वह इस यथार्थ की कोख से निकला था कि इस देश में सैकड़ों सालों से तमाम पहचानें मिल–जुल कर रहती रही हैं और इसे बनाती रही हैं। इनमें टकराव होते रहे हैं, लेकिन इस टकराव के बावजूद मेल–मिलाप और सामाजिक–सांस्कृतिक लेनदेन की जड़ें इनमें इतनी गहरी हैं कि उनको एक साथ ही बने रहना है। बेशक, विभाजन ने इस विचार पर चोट की, उसके बावजूद हिंदुस्तान अपनी पुरानी प्रकृति में बना रहा–आज भी बना हुआ है। मगर बीते दो–तीन दशकों में इस विचार पर लगातार चोट की जा रही है। एक आक्रामक बहुसंख्यकवाद अपने–आपको देश और राष्ट्र का इकलौता प्रतिनिधि साबित करने पर तुला है और बाक़ी सारी पहचानों से वैधता और दस्तावेज मांग रहा है। तीन दशक तक चली राम मंदिर की राजनीति पर सुप्रीम कोर्ट के फैसले और मंदिर निर्माण के बाद क़ायदे से लगाम लग जानी चाहिए थी, लेकिन देखा यह जा रहा है कि अब इस निर्माण को राष्ट्र–निर्माण और राष्ट्र–परिवर्तन का पर्याय बताया जा रहा है। पुनरुत्थानवादी प्रवृत्तियां नई ताक़त के साथ लौटी हैं और वे मिथक–कथाओं को ठोस यथार्थ मानते हुए एक

नई संसद के उद्घाटन में पंडित–पुरोहितों के साथ राजदंड 'सेंगोल' स्थापित करते प्रधानमंत्री मोदी